19. 1857 का विद्रोह

जनवरी 1857 ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना में पुरानी ब्राउन वेस के स्थान पर एक नयी 'Ertield Rifle' का प्रयोग शुरू किया गया इसके कारतूसों मे गाय और सुअर की चर्बी लगी होती थी। इन कारतूसों का प्रयोग करने के पहले इस चर्बी को दांत से काटना पड़ता था। सेना में इन कारतूसों का प्रयोग ही सैनिकों के विद्रोह का तात्कालिक कारण था यद्यपि इस विद्रोह की पृष्ठभूमि में अनेक सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक धार्मिक कारण भी उत्तरदायी थे।

- सर्वप्रथम बहरामपुर (कलकत्ता) से 120 मील दूर में 19वीं Native Infahtry Regiment के सिपाहियों ने 26 फरवरी 1857 को इन कारतूसों के प्रयोग से इंकार कर दिया।
- 29 मार्च 1857 बैरकपुर (कलकत्ता) 34वीं Native Infantry Regiment के सिपाई मंगल पाण्डे ने लेफ्टीनेट कर्नल वाग (Waugh) को गोली मार दी और सार्जेण्ट 'हियरसन' को गोली मारकर घायल कर दिया।
- मंगल पाण्डे को गिरफ्तार कर लिया गया और 6 अप्रैल 1857 को उसका कोर्ट मार्शल किया गया तथा 34वीं Native Infantry Regiment के सूबेदार मेजर जवाहर लाल तिवारी एवं तीन अंग्रेज अधिकारियों–

1. कैप्टन जी.सी. हैच
2. जैम्स वॉलिंग्स
3. एवं एस.जी. व्हीलर की सम्मिलित समिति ने मंगल पाण्डे को सजा सुनाई तथा 8 अप्रैल, 1857 को मंगल पाण्डे को फासी की सजा दे दी गयी।

अगले क्रम में 10 मई 1857 मेरठ की सेना ने खुला विद्रोह कर दिया मेरठ के लेफ्टीनेट कर्नल हैपिट के पास 2200 यूरोपी सैनिक थे लेकिन उसने विद्रोही सैनिकों को रोकने का कोई प्रयास नहीं किया।

विद्रोह : यह किसी सीमित लक्ष्य के लिए सीमित क्षेत्र में किया जाता है। विद्रोह हिंसक व अहिसक दोनों हो सकता हैं। किन्तु सामान्यत इसमें हिंसा के तत्व ज्यादा प्रभावी होते है यह किसी निश्चित संगठन या विचार धारा से संचालित नहीं होते है। बल्कि कुछ व्यक्ति या व्यक्तियों के द्वारा यह आरम्भ किया जाता है।

आन्दोलन : यह दीर्घकालिक तरीके से अपने साध्य को प्राप्त करने का उद्देश्य रखता है इसमें निश्चित नेतृत्व निश्चित संगठन व निश्चित विचार धारा महत्वपूर्ण हो जाती है आन्दोलन सामान्यत: सवैधानिक तरीके से या गैर सवैधानिक तरीके से क्रमिक सुधार की आँकक्षा रखता है इसमें जन सहभागिता को अति आवश्यक तत्व माना जाता है।

क्रांति : नियत समय में परमपरागत व्यवस्था में आमूल चूल परिवर्तन क्रांति कहलाता है। सामान्यत: क्रान्ति में (प्रमुखत: राजनैतिक परिवर्तन में हिंसा शामिल हो जाती है) किन्तु वास्तव में क्रान्तिकारी हिंसा का शिकार शोषक सत्ता से जुड़े अधिकारियों को ही बनाते हैं।

आतक : वस्तुत: आंतक एक मनोदशा है न कि कोई सिद्धान्त इसमें अपनी माँगे पूर्ण कराने के लिए भय और आंतक का वातावरण सर्जित किया जाता है। और यहां हिंसा सर्वोपरि हो जाती है।

आतंकवाद यह ध्यान नहीं देता कि वह केवल दोषियों को हिंसा का शिकार बनता है। या फिर निर्दोशों को

नक्सलवाद : 1960 के दशक के अन्तिम दौर में बंगाल के नक्सलवाड़ी क्षेत्र से माउवादी विचार धारा से प्रेरित एक आन्दोलन के रूप में इसकी शुरूआत हुई सामाजिक आर्थिक विषमता को मिटाने के लिए सामान्य जनता ने हथियार का प्रयोग करने का निर्णय लिया और हमारी प्रशासनिक कमी ने भावनाओं को और उग्र बना दिया। किन्तु 1990 के बाद नक्सवाद की विचार धारा में महत्वपूर्ण वदलाव आया और यह केन्द्रीय राजनैतिक शक्ति बनने की चाहत भी रखने लगा इसी समय से यह आतक के रास्ते की और मुढ़ गया और मासूम निर्दोषों की हत्या भी की जाने लगी।

वर्तमान में नक्सलवाद को वाह्य देशों का समर्थन विशेषत: आतंकवादी गुटो से भी मिलने लगा है और लाल गलियारा जो काण्डमाड़ू से तेलगाना तक जाता है यहाँ नक्सलियों का प्रभुत्त स्थापित है।

अपने लक्ष्यों की प्राप्ति का सबसे सहज और महत्वपूर्ण रास्ता आन्दोलन है न कि आंतक समस्या को सुलझाने की बजाय उसे और बढ़ा देता है।

जनवरी 1857 ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना में पुरानी ब्राउन वेस के स्थान पर एक नयी 'Ertield Rifle' का प्रयोग शुरू किया गया इसके कारतूसों मे गाय और सुअर की चर्बी लगी होती थी। इन कारतूसों का प्रयोग करने के पहले इस चर्बी को दांत से काटना पड़ता था। सेना में इन कारतूसों का प्रयोग ही सैनिकों के विद्रोह का तात्कालिक कारण था यद्यपि इस विद्रोह की पृष्ठभूमि

में अनेक सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक धार्मिक कारण भी उत्तरदायी थे।

- सर्वप्रथम बहरामपुर (कलकत्ता) से 120 मील दूर में 19वीं Native Infahtry Regiment के सिपाहियों ने 26 फरवरी 1857 को इन कारतूसों के प्रयोग से इंकार कर दिया।
- 29 मार्च 1857 बैरकपुर (कलकत्ता) 34वीं Native Infantry Regiment के सिपाई मंगल पाण्डे ने लेफ्टीनेट कर्नल वाग (Waugh) को गोली मार दी और सार्जेण्ट 'हियरसन' को गोली मारकर घायल कर दिया।
- मंगल पाण्डे को गिरफ्तार कर लिया गया और 6 अप्रैल 1857 को उसका कोर्ट मार्शल किया गया तथा 34वीं Native Infantry Regiment के सूबेदार मेजर जवाहर लाल तिवारी एवं तीन अंग्रेज अधिकारियों-

1. कैप्टन जी.सी. हैच
2. जैम्स वॉलिंग्स
3. एवं एस.जी. व्हीलर की सम्मिलित समिति ने मंगल पाण्डे को सजा सुनाई तथा 8 अप्रैल, 1857 को मंगल पाण्डे को फासी की सजा दे दी गयी।

अगले क्रम में 10 मई 1857 मेरठ की सेना ने खुला विद्रोह कर दिया मेरठ के लेफ्टीनेट कर्नल हैपिट के पास 2200 यूरोपी सैनिक थे लेकिन उसने विद्रोही सैनिकों को रोकने का कोई प्रयास नहीं किया।

1857 के विद्रोह की पृष्ठभूमि अग्रेजों द्वारा 100 वर्षों के भीषण उत्पीड़न ने तैयार की। भारत में सदैल चार तत्वों धर्म, मान, जीवन, सम्पति को महत्वपूर्ण माना जाता रहा है। किन्तु अग्रेजों ने इन सभी पर गहनता से प्रहार किया इस महान विद्रोह को निम्नलिखित आयनों पर परखा जा सकता है।

राजनैतिक कारण :

(a) अग्रेज सदैव विदेशी वने रहे :
अग्रेजों का लक्ष्य सदैव ब्रिटेन के हितो की पूर्ति करना बना रहा और उन्होने भरतीयो का भरपूर्ण शोषण किया।

(b) डलहौजी की हड़प नीति से तत्कालीन राजनैतिक शक्तियों में असन्तोष
मुगल सत्ता के सम्मान में कमी नाना साहब की पेंशन को रोकना

(c) 1856 में अवध को कुशासन के आरोप में विटिश सामाज्य में मिलाने की घोषाणा

आर्थिक व प्रशासनिक : चूकि अग्रेज भारत के संसाधन का इस्तेमाल ब्रिटेन की उन्नति के लिए कर रहे थे। अत: भारत की पूरी अर्थव्यवस्था धराशायी होने लगी और हम, गरीबी भुखमरी और अकाल के दुषचक्र में फंस गये।

ब्रिटिश शासन प्रणाली में प्रशासनिक व सैन्य पदो पर भारतीयों को महत्वपूर्ण पद नहीं दिया जाता था वस्तुत अग्रेज भारतीयों को प्रशासन के योग्य नहीं मानते थे।

सामाजिक धार्मिक कारण :

अंग्रेजो द्वारा भारत के सामाजिक सांस्कृतिक ढाचे में हस्तक्षेप उनके कही सामाजिक विधान जैसे 1829 सती प्रथा निषेध आदि हमारे परम्परागत समाज को असन्तुष्ट करने लगा।

1813 के अधिनियम से ईसाई धर्म प्रचारकों को भारत आने की छूट तथा हिन्दू और मुसलमानों की धार्मिक प्रतीको एवं मान्यताओं पर प्रहार

1850 में धार्मिक अयोग्यता अधिनियम लैस-लौसी एक्ट पारित कर धर्मान्तरण को बढ़ावा देने की कोशिश।

सैन्य कारण :

1. भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का स्थायित्व सेना पर ही टिका था। किन्तु ब्रिटिश नीतियों से भारतीय सैनिक असन्तुष्ट वने रहे जिसका उदाहरण 1806 से 1857 तक सैन्य विद्रोहों का होना।
2. 1856 में केनिग द्वारा सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम लाया गया
3. सैनिक कारणों में एक महत्वपूर्ण आयाम यह भी था कि सैनिको की पारवारिक पृष्ठभूमि कृषि संरचना से जुड़ी थी अर्थात सैनिक वर्दी वाले किसान थे।

तात्कालिक कारण :

चर्बी वाले कारतूस की अफवाह हिन्दू व मुस्लिम दोनों वर्ग के सैनिको की धार्मिक मान्यताओं पर चोट की और अब सैनिको का असन्तोष विद्रोह का रूप ले वैठा और इस घटना ने पहले से व्याप्त असन्तोष को व्यापक व व्यावहारिक बनने का अवसर प्रदान कर दिया अर्थात इस घटना ने भारतीयों के असन्तोष रूपी वारूद में चिगारी का काम किया।

1857 के विद्रोह का स्वरूप :

कथन	**व्यक्ति**
स्वार्थी सैनिको का विद्रोह	शीले व लारेन्स
हिन्दू मुस्लिम षदयन्त्र	आउतम व टेलर
राष्ट्रीय सघर्ष	डिजरैली (लंदन विपक्ष नेता)
प्रथम स्वतंत्रता संग्राम	वी.डी. सावरकर
	आर.सी. मजूमदार

न तो प्रथम न राष्ट्रीय नहीं स्वतंत्रता हेतु संग्राम :

- 1857 के विद्रोह के अधिकारक इतिहासकार सुरेन्द्र नाथ सेन थे।

1857 महत्वपूर्ण तथ्य

- 1857 के विद्रोह के समय ब्रिटेन के प्रधानमंत्री लार्ड पॉर्मस्ट्रन थे।
- ब्रिटेन में विपक्ष के नेता- वैजामिन डिजरायली थे।
- ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया थी।
- भारत का गर्वनर जनरल लार्ड कैनिग था। (अंतिम गर्वनर जनरल प्रथम वायसराय)
- E.I.C का मुख्य सेनापति जार्ज एचिसन था।
- E.I.C कीसेना में कुल ब्रिटिश सैनिकों की संख्या 45000 थी।
- E.I.C की सेना में भारतीय सैनिकों की संख्या 2 लाख 38 हजार थी। इस प्रकार E.I.C की सेना में ब्रिटिश एवं भारातीय सेना काअनुपात 1:5 था।
- 1857 के विद्रोह का एक मात्र प्रत्यक्षदर्शी शायर मिर्जा गालिब था।
- भारत का सम्राट बहादुर शाह जफर था।
- दिल्ली शस्त्रागार का प्रमुख जनरल विलोवी था।
- E.I.C के समर्थकों में प्रमुख ग्वालियर का सिंधिया परिवार था।

कैनिग ने कहा 1857 के इस तूफान (विद्रोह) के आगे इन देशी रजवाड़ों ने (विशेष तौर पर सिंधिया) एक बांध का काम किया वरना यह तूफान हमें एक ही झटके में बहा ले जाता और हमे कल ही बोरिया बिस्तर बाधना पड़ जाता।

- 1857 के विद्रोह का प्रतीक चिन्ह 'रोटी और कमल' था जिसका संकेतात्मक अर्थ है कि 'अंग्रेजों को भगाने से हम भारतीयो की रोटी सुरक्षित होगी तभी हमारा देश कमल सा खिल उठेगा'।
- विद्रोही सैनिकों के साथ एक मात्र महिला जो पुरूषों के भेष में लड़ी- कानपुर की नर्तकी अजीजन बाई।
- 1857 के विद्रोह मे एक मात्र अंग्रेज सैनिक जो भारतीय सैनिकों के साथ अंग्रेजों के विरूद्ध लड़ा- कैप्टन गार्डन था जो मंगल पाण्डे का प्रिय दोस्त था।
- 1857 के विद्रोह को सर्वप्रथम विनायक दामोदर सावरकर ने अपनी पुस्तक 1857 The first war of Indain independence में भारत का प्रथम राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम कहा। (1909)

आधुनिक इतिहासकार R.C. मजूमदार तथाकथित प्रथम राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम न तो प्रथम था न ही राष्ट्रीय था न ही स्वतंत्रता संग्राम था।

1857 विद्रोह की कुछ महत्वपूर्ण पुस्तक

1. 1857 के विद्रोह के सरकारी इतिहासकार डॉक्टर सुरेन्द्र नाथ की पुस्तक Eighteen Fifty Seen
2. The Great – अशोक मेहता
3. Civil Rebelliancesin the Indian Muties – शशिभूषण चौधरी
4. Causel of Indian Mutiny sepoy mutiney and revolt of 1857 MkW– आर.सी. मजूमदार

11 मई 1857 को मेरठ के विद्रोही सैनिकों ने दिल्लीपर कब्जा कर लिया और अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर को 'शहंशाह ए हिन्दुस्तान' घोषित कर दिया यद्यपि बहादुर शाह प्रतीकात्मक रूप से ही बादशाह था क्योंकि वह 80 वर्ष का बूढ़ा और शक्ति हीन हो चुका था। विद्रोही सैनिकों ने प्रशासनिक व्यवस्था को संभालने के लिए एक प्रशासनिक समिति जलसा का गठन किया गया इसका नेतृतव बख्तखान ने किया

व्रिदोह के प्रमुख केन्द्र	नेतृत्व कर्ता	दमन कर्ता
दिल्ली	वख्तखान	जाननिकलसन एवं हडसन
कानपुर	नाना साहब	हैवलॉक एवं कालिन कैम्वेल
	तात्या टोपे (मूलनाम रामचन्द्र पाण्डुरंग)	

- नाना साहब के दो सहयाक : 1. रांगो जी बापू 2. अज्जी मुल्लाखान
- 1857 के विद्रोह में कानपुर नेतृत्व कर्ता के नाना साहब एवं लखनऊ की बेगम हजरत महल पकड़े नहीं जा सके और नेपाल भाग गये।

लखनऊ	बेगम हजरत महल (अल्पवयस्क नवाब विरजिस कद्र)	कालिन केम्बेल
झांसी	रानी लक्ष्मीबाई (दत्तक पुत्र दामोदरराव) तथा (सहायिका झलकारी बाई)	केप्टन ह्यूरोज

1. झांसी की राजनी लक्ष्मीबाई की सहायिका बैजाबाई ने गद्दारी की थी।
2. रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु पर कैप्टन ह्यूरोज ने कहा 'यहां पर वो महिला सोई है जो विद्रोहियों में मात्र एक मर्द थी। (बचपन का नाम - मनुबाई, छबीली)'।

इलाहाबाद	लियाकत अली	नील
फैजाबाद	मौलवी अब्दुल्ला	कालीन गैवेन जनरल रेनार्ड
रूहेलखण्ड (बरेली)	खान बहादुर खान	कालीन कैम्बेल
बिहार		विलियम टैलर और बिन्सेरआयर
बनारस		कैप्टन नील
असम	दीवान मणिराम दत्ता	
गोरखपुर	गजाधर सिंह	
मथुरा	देवी सिंह	
मेरठ	कदम सिंह	
मंदसौर (मध्य प्रदेश)	फिरोज शाह	
कोटा (राजस्थान)	जयदयाल और हरदयाल	
हरियाणा	तुलाराम राव	
सुल्तानपुर	शहीद हसन	
उड़ीसा	उज्जवल शाह और सुरेन्द्र शाह	

अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाह एंव उसकी बेगम जीनत महल को कलकत्ता के बजबज बंदरगाह से रंगून निर्वासित कर दिया गया उसका मकबरा आधुनिक म्यांमार के शहर दौगोन में हैं उसकी कब्र पर निम्न पंक्तियां अंकित हैं।

'इतना बदनसीव है ये जफर कि दफन के लिए दो गज जमीन भी नहीं मिली - कू-ए-यार'

1. रानी लक्ष्मीबाई के साथ गद्दारी करने वाले, दो प्रमुख अधिकारी (1) दुल्हाजू (2) पिरअली थे।
2. रानी लक्ष्मीबाई की प्रमुख सहायिकाओं में झलकारी के अलावा गदरा एवं काशी दो वीरागनाएं थी।
3. रानी लक्ष्मीबाई मात्र 23 वर्ष की अवस्था में शहीद हो गयी उनका वफादार नौकर रामचन्द्र राव देशमुख उनके पास था वह घायल रानी को उठाकर वही निकट गंगादास की कुटिया में ले गया जहां रानी का अंतिम संस्कार सम्पन्न हुआ।
4. इलाहाबाद के विद्रोह के नेतृत्वकर्ता लियाकत को गिरफ्तार करके अण्डमान भेज दिया गया जहां कई वर्षों के उपरांत उनकी मृत्यु हो गई।

20 सितंबर 1857 ब्रिटिश सेनापति हड़सन ने बहादुरशाह जफर के दो पुत्रों मिर्जामुगल एवं मिर्जाख्बाजा सुल्तान तथा एक पौत्र मिर्जा अबुवक्त को गोली मार दी बहादुर शाह जफर भागकर हुमायू के मकबरे में छिप गया जहां से उसे गिरफ्तार करके देशद्रोह का मुकदमा चलाया गया और न्यायधीश मेजर हैरियत ने उसे निर्वासन की सजा दी जफर को उसकी पत्नी जीनत महल एवं शहजोद 'जवाबख्त' के साथ बजबज बन्दरगाह (कलकत्ता) से रंगून निर्वासित कर दिया गया जहां 1862 में उसकी मृत्यु हो गयी।

महारानी विक्टोरिया का घोषण पत्र

1 नवम्बर 1858 इलाहाबाद के 'मिन्टो पार्क' में एक अंग्रेजी दरबार का आयोजन किया गया। यही कैनिंग ने महारानी विक्टोरिया का घोषणा पत्र पढ़ा इस घोषणा पत्र को भारतीय जनता का महान अधिकार पत्र कहा जाता है। जिसकी प्रमुख बातें इस प्रकार हैं-

1. भारतीय प्रशासनिक नियंत्रण सीधे ब्रिटिश क्राउन के अधीन चला गया अब ब्रिटिश संसद भारतीय मामलों में सीधी उत्तरदायी हो गयी।
2. अब भारत के गर्वनर जनरल को भारत का वायसराय घोषित किया गया जो भारत में क्राउन का व्यक्तिगत प्रतिनिधि था। इस प्रकार कैनिग भारत का अन्तिम गर्वनर जनरल तथा भारत का प्रथम वायसराय नियुक्त हुआ।
3. भारतीय रियासतों को गोद लेने का अधिकार सौंपा गया।
4. राज्य हड़प नीति का पूर्णतया परित्याग कर दिया गया तथा भारतीय रियासतों को यह आश्वासन दिया गया कि उनकी रियासतो में उनके अधिकार सुरक्षित रहेंगे तथा ईस्ट इंडिया कंपनी उनके आंतरिक मामलों में कोई हस्तक्षेप नहीं करेगी।

- 1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास का एक गौरवमयी पठाव है हमारे स्वतंत्रता संघर्ष का उज्जवल अध्याय है। इस विद्रोह के कारण और प्रभाव जितने स्पष्ट है। इसके स्वरूप को विभिन्न विद्वानों ने अपनी प्रतिवाधिताओं व पूर्व मान्यताओं से ग्रसित होकर जटिल बना दिया हैं। तार्किक रूप से हम इसके स्वरूप को विश्लेषित करने के लिए दो भागों में वर्गीक्रत कर सकते है।

प्रथम मत :

ओपनिवेशिक इतिहासकार व उनके विचारो के समर्थक जो मानते है कि इस विद्रोह का स्वरूप एक वर्गीय था और इसका सबसे सबल उदाहरण इसका सैनिक विद्रोह होना है।

पक्ष में तर्क :

- विद्रोह की शुरूआत सैनिको ने की व्यापकता भी सैनिको की थी। और इसका अन्त भी सैनिको के दमन से हुआ।
- ब्रिटिश प्रशासन के कुछ प्रगतिशील कदमों को अपनी कटटर धार्मिक मान्यताओं के आधार पर स्वीकार नही पा रहे हैं।
- तात्कालिक इस विद्रोह का करण चर्ती वाले कारतूस की अफवाह थी।

विपक्ष में तर्क :

- सैनिको के अतिरिक्त राजाओ नवाबो, सामनतो की आदि सहभागिता और कई स्थानो पर यह जन्य सामान्य का विद्रोह था। जैसे बनारस व इलाहाबाद
- सैनिक सभी स्थानों पर समानरूप से विद्रोह में शामिल नहीं थे। वल्कि कुछ स्थानों पर तो भारतीय सैनिक ही विद्रोहियो का दमन कर रहे थे।
- वस्तुत इनका कारण सिद्धान्त ही गलत है। क्यो कि चर्वोवाला कारतूस इस विद्रोह का तात्कालिक कारण तो था किन्तु सबसे महत्वपूर्ण एवं एक मात्र कारण नहीं माना जा सकता।

इसी तरह हम अग्रेजो के अन्य तर्कों को जिसमें एक वर्गीयता की वात की गई है। को नकार सकते है। इसके साथ ही हिन्दू मुस्लिम षड़यन्त या धर्मान्धो का युद्ध कहना अग्रेजो की नस्लीयता को दर्शाता है ऐसा स्वरूप इसलिए बताया गया जिससे भारतीय अपने गौरवमई इतिहास से बचित रहे और अग्रेज अपनी सत्ता के चित्त को सिद्ध कर सके।

द्वितीय मत :

भारतीय इतिहासकार तथा उनके मत के समर्थक जो यह तो मानते है कि विद्रोह वहुवर्णीय व व्यापक था किन्तु यह राष्ट्रीय या स्वतंत्रता संग्राम था या नहीं इसे मानने में मतभेद है। इस मत को हम एक महत्वपूर्ण कथन के आधार पर रख सकते है। 'न तो प्रथम'

- सबसे पहले हम 'प्रथम' शब्द का अवलोकन करे तो यह इस आधार पर नकारा गया है कि 1857 से पहले भी अग्रेजो के विरूद्ध विभिन्न सैनिक, कृषिक, जनजाति विद्रोह होते रहे है किन्तु यदि हम तार्किक रूप से देखे तो 1857 के पूर्व के विद्रोह में न तो इतनी व्यापकता थी। और नहीं सर्वसहभागिता थी यह भी महत्वपूर्ण है कि इस विद्रोह के बाद विट्रिश सत्ता को भारत के प्रति अपनी नीतियो को आमूल रूप से बदलना पड़ा। अत: इसका स्वरूप प्रथम व्यापक विद्रोह ही स्वीकार जाना चाहिए।

राष्ट्रीय संघर्ष :

- यदि हम राष्ट्रीयता की ''आधुनिक यूरो केन्द्रित परिभाषा पर इसे परखे तो नि: सन्देह यह विद्रोह राष्ट्रीय स्वरूप धारण नहीं करता क्योंकि राष्ट्रीयता हेतु एक ऐसी भावना का होना आवश्यक जो सभी लोगो को आपस में जोड़ सके और वे एक दूसरे के लिए वलिदान करने के लिए तत्पर्य हो। इसके साथ ही राष्ट्रीय संघर्ष में निश्चित विचार धारा, संगठन व नेतृत्व के उपस्थित अपरिहार्य मानी जाती है। और राष्ट्रीय संघर्ष के लक्ष्य भी प्रगतिशील होने चाहिए। जबकि यह विद्रोह ''घड़ी की सुइयो को विपरीत दिशा में घुमाने का प्रयास था।'
- किन्तु यदि तत्कालीन परिस्थितियो के आधार बनाकर इसका विशलेषण करे तो इस भावना के अभाव में भी राष्ट्रीय संघर्ष के कई अंश दिखाई देते है। शिक्षा प्रणाली का व्यापक न होना संचार व परिवहन व्यवस्था का परमपरागत और इसमें जनता सहभागिता 'वहुवर्गीय सहभागिता' तथा इसका धर्म निरपेक्ष चरित्र इसे इन मूल्यो से जोड़ता प्रतीत होता हैं।

स्वतंत्रता संग्राम :

- स्वतंत्रता सघर्ष इस आधार पर नकारा जाता है। कि विद्रोही सभी स्वतंत्रता की बात नहीं कर रहे थे। और भारत की सभी जनता या वर्ग इसमें शामिल नहीं था। इस विद्रोह को केन्द्र विन्दु स्वार्थी हितो की सहभागिता थी।
- ध्यात्वय है कि स्वतंत्रता संग्राम में एक शोषक प्रतिपाद 'समान्यत: विदेशी' का होना आवश्यक होता है। तत्कालीन भारत में सभी विद्रोहियो का एक मात्र लक्ष्य ब्रिटिश शासन को मिटाकर उनसे मुक्ति पाना था। तो दूसरी तरफ यह कही व कभी नही होता कि स्वतंत्रता संग्राम में समस्त जनता का या वर्ग समान रूप से भाग ले। चाहे वह महान फ्रांसीसी क्रान्ति हो या फिर अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम क्यो न हो अत: सभी विद्रोहीयो का लक्ष्य एक ही बिन्दु अर्थात ब्रिटिश सत्ता से युक्ति होने के कारण उनके स्वार्थ परार्थ में

बदल जाते है। इस आधार पर इस विद्रोह में स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण अंश तो अवश्य ही मिलते है।

- पूर्वगामी विद्रोहो तथा गाँधीवादी आन्दोलनो से भिन्न होने के कारण विभिन्न क्षेत्रों में इसकी तीव्रता भिन्न होने के कारण तथा वर्गीय हितो से जुड़ने से इसका स्वरूप जटिल प्रतीत होता है। इसके स्वरूप के बारे में कहे गये सभी कथनों में सत्यता का अंश तो विद्यमान है। किन्तु सम्पूर्णता किसी में नहीं। अत: इसके स्वरूप को निर्धारित करने के लिए हमे सभी कथनों के समुच्चय को साथ लेना होगा।

1857 के बाद राजनैतिक प्रशासनिक परिवर्तन :

- 1857 के विद्रोह से यह स्पष्ट हो गया कि भारत की जनता ब्रिटिश शासन से असन्तुष्ट है ब्रिटिश सरकार को इसे ही किसी स्वर्णिम अवसर की तलाश थी। 1858 के एक्ट में यह उल्लिखित था कि अव ईस्ट इण्डिया कम्पनी ब्रिटिश सरकार की तृष्टि की तरह उसे जब चाहे सरकार भारत की सत्ता छीन सकती है। अब ब्रिटिश भारत का शासन कम्पनी से क्राउन ने अपने हाथो में ले लिया।

  इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण परिवर्तन निम्नलिखित थे।

- गर्वनर जनरल की उपाधि वायसराय कर दी गई जिसका आश्रय था सम्राट का व्यक्तिगत प्रतिनिधि।
- 1784 के पिट्स इण्डिया एक्ट से भारत पर चला आ रहा दोहरा नियन्त्रण समाप्त।
- भारत सरकार के कार्य संचालन हेतु भारतीय राज्य सचिव और उसकी परिषद का गठन किया गया। जो लंदन से ही कार्य करता है।
- देशीय रियासतो के साथ अग्रेजो ने मित्रवत व्यवहार को अपनाया क्योकि 1857 के विद्रोह के विषय वातावरण में इस वर्ग ने अग्रेजो की सहायता की थी। देशीय रियासतो के साथ अब अधीनस्थ पार्थक्य की जगह आधिनस्थ संघ की नीति अपनायी गई।
- अंग्रेजो ने अब क्षेत्रीय सीमा विस्तार की नीति का सैधातिक रूप से त्याग किया।
- 1861 के बाद भारत में विकेन्द्रीयकरण की शुरूआत हुई और प्रशासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए I.P.C, C.R.P.C. आदि संधिताये लागू की गयी।
- सिविल सेवा की परीक्षा सभी के लिए ओपन कर दी गयी परन्तु विषय परीक्षा का स्थान उम्र ऐसी निर्धारित की गयी जिससे अधिक भारतीय इसमें सफल न हो सके।
- भारतीय सैनिको को जातिनस्ल व क्षेत्र के आधार पर वॉटने के कोशिश की गयी और सिख गोरखा व कुमायूं आदि रेजीमेन्टो की स्थापना की गयी।